अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादरी

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

रज़ा या रिज़ा

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादरी

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

AMO
ABDE MUSTAFA OFFICIAL

Book’s Description

नाम	रज़ा या रिज़ा?
अज़ क़लम	अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
नाशिर	साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन
डिज़ाइनिंग	प्योर सुन्नी ग्राफिक्स
सना इशाअ़त	जुमादल ऊला 1444 हिजरी दिसम्बर 2022 ईसवी
सफ़हात	23

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

AMO
POWERED BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL
info@abdemustafa.in

اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

फ़ेहरिस्त

नाशिर की तरफ से कुछ अहम बातें

मुख्तलफ़ ममालिक से कई लिखने वाले हमें अपना सरमाया इरसाल फ़रमा रहे हैं जिन्हें हम शाया कर रहे हैं, हम ये बताना जरूरी समझते हैं कि हमारी शाया करदा किताबों की मुंदरिजात (Contents) की ज़िम्मेदारी हम इस हद तक लेते हैं कि ये सब अहले सुन्नत व जमाअ़त से है और ये ज़ाहिर भी है कि हर लिखारी का ताल्लुक़ अहले सुन्नत से है, दूसरी जानिब अकाबिरीने अहले सुन्नत की जो किताबें शाया की जा रही हैं तो उन के मुताल्लिक़ कुछ कहने की हाजत ही नहीं। फिर बात आती है लफ्ज़ी और इमलाई गलतियों की, तो जो किताबें **"टीम अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल"** की पेशकश होती हैं उनके लिये हम ज़िम्मेदार हैं और वो किताबें जो मुख्तलफ़ ज़राए से हमें मौसूल होती हैं, उन में इस तरह की गलतियों के हवाले से हम बरी हैं कि वहाँ हम हर-हर लफ्ज़ की छान फटक नहीं करते और हमारा किरदार बस एक नाशिर का होता है।

ये भी मुम्किन है कि कई किताबों में ऐसी बातें भी हों जिनसे हम इत्तिफ़ाक़ नहीं रखते, मिसाल के तौर पर किसी किताब में कोई ऐसी रिवायत भी हो सकती है कि तहक़ीक़ से जिसका झूटा होना अब साबित हो चुका है लेकिन उसे लिखने वाले ने अदमे तवज्जो की बिना पर नक़्ल कर दिया या किसी और वजह से वो किताब में आ गई जैसा कि अहले इल्म पर मखफी नहीं कि कई वुज़ूहात की बिना पर ऐसा

होता है, तो जैसा हमने अर्ज़ किया कि अगर्चे उसे हम शाया करते हैं लेकिन इससे ये ना समझा जाए कि हम उससे इत्तिफ़ाक़ भी करते हैं।

एक मिसाल और हम अहले सुन्नत के माबैन इख़्तिलाफ़ी मसाइल की पेश करना चाहते हैं कि कई मसाइल ऐसे हैं जिन में उलमा -ए-अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ है और किसी एक अमल को कोई हराम कहता है तो दूसरा उसके जवाज़ का क़ाइल है, ऐसे में जब हम एक नाशिर का किरदार अदा कर रहे हैं तो दोनों की किताबों को शाया करना हमारा काम है लेकिन हमारा मौकिफ़ क्या है, ये एक अलग बात है, हम फरीकैन की किताब को इस बुनियाद पर शाया कर सकते हैं कि दोनो अहले सुन्नत से हैं और ये इख़्तिलाफ़ात फुरूई हैं।

इसी तरह हमने लफ़्ज़ी और इमलाई गलतियों का ज़िक्र किया था जिस में थोड़ी तफ़्सील ये भी मुलाहिज़ा फ़रमाएँ कि कई अल्फाज़ ऐसे हैं के जिन के तलफ़्फ़ुज़ और इमला में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, अब यहाँ भी कुछ ऐसी ही सूरत बनेगी कि हम अगर्चे किसी एक तरीक़े की सिह्हत के क़ाइल हों लेकिन उसके ख़िलाफ़ भी हमारी इशाअत में मौजूद होगा, इस फ़र्क़ को बयान करना ज़रूरी था ताकि क़ारईन में से किसी को शुब्हा न रहे।

टीम अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल की इल्मी, तहक़ीक़ी और

इस्लाही किताबें और रिसाले कई मराहिल से गुजरने के बाद शाया होते हैं लेकिन इसके बावजूद इन में भी ऐसी ग़लतियों का पाया जाना मुम्किन है लिहाज़ा अगर आप उन्हें पाएँ तो हमें ज़रूर बताएँ ताकि उसकी तस्हीह़ की जा सके।

साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

POWERED BY

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के नाम में मौजूद लफ़्ज़ "रज़ा" को "रा" के ज़बर और ज़ेर के साथ पढ़ने के बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। इस से मुतल्लिक़ हम ने उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहकीक़ात को यहाँ जमा किया है, मुलाहिज़ा फरमाएं।

फ़तावा बह़रुल उ़लूम में एक सवाल

फ़तावा बह़रुल उ़लूम की छठी जिल्द के ज़ुबानो बयान के बाब में ये सवाल किया गया :

क्या फ़रमाते हैं उलमा -ए- दीन व मुफ्तियाने शरअ़ मतीन व फ़ुज़ला -ए- मुहक़्क़िक़ीन मसअला -ए- ज़ेल में के हमारे यहाँ ये बहस बहुत दिनों से चली आ रही है कि "रज़ा" (में) "रा" के ज़बर के साथ सही है या रज़ा "रा" के ज़ेर के साथ। ये बहस इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहु के नाम से निकली है। कुछ नौ फा़रिग़ उ़लमा कहते हैं कि आप का नाम अह़मद रज़ा (बा फत्हे रा) है और

कुछ लोग कहते हैं कि अह़मद रिज़ा (बा कसरा) है। और ये लोग अ़रबी को या उर्दू हर जगह बिला इल्तिजा़म रिजा़ ही पढ़ते हैं और ताकीदन पढ़वाते भी हैं और रिज़ा पढ़ना फ़र्ज़ समझते हैं और उन की दलील ये है कि अलमुंजीद वग़ैरह लुगा़त में रिजा़ का ज़िक्र है, रजा़ का ज़िक्र नहीं है। और जो लोग रज़ा (ज़बर के साथ) के का़इल हैं वो कहते हैं कि सिलसिला -ए- रज़विय्या के शजरे में कई जगह रज़ा ज़बर के साथ आया है। नीज़ ये हुज़ूर मुफ़्ती -ए- आज़मे हिन्द क़ुद्दिसा सिर्रूहू के सामने हमेशा रज़ा ज़बर के साथ पढ़ा गया लेकिन कभी हज़रत ने मना नहीं फ़रमाया। लिहाज़ा तलब अम्र ये है कि रज़ा ज़बर के साथ दुरूस्त है या ज़ेर के?

मुफ़स्सल व मुदल्लल जवाब इनायत फरमाएं और दस्तख़त व मुहर से मुज़य्यन फ़रमा कर ममनून फरमाएं।

अल मुस्तफ़ता मुहम्मद तसव्वुर अली रज़वी, रामपुर
2 सफर, 1406 हिजरी

अल जवाब

इस सवाल के जवाब में बह़रुल उ़लूम, ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान आज़मी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह लिखते हैं कि अरबी लुगा़त के मुताले से ये मालूम होता है कि लफ़्ज़ रज़ा बिल कसरा (यानी ज़ेर के साथ) मसदर भी है और इस्म भी और रूज़ा "रा" के ज़िम्मा (पेश) के साथ मसदर है।

क़ामूस में है :

رَضی یرضی رِضوانا و رِضی ورضوانا والرِضی الضامن
والمحب ولقب علی ابن موسی (ص۸۷۹)

और बिल फतह़ नहीं, ऐसा ही ख्याले मुंजीद के देखने से भी होता है लेकिन साहिबे ग़यासुल लुग़ा़त ने बा कसरा व बा फतह़ दोनों लिखा है। इबारत उन की ये है :

رِضا بکسر خوشنودی و بفتح خوشنود شدن ودر
منتخب بمعنی اول بفتح نوشته و صاحب کشف و
صراح و مذیل الاغلاط و ابن حاج بمعنی اول بکسر
نوشته.

इस के अलावा उर्दू की मुस्तनद लुग़ा़त मस्लन फरहंगे आसिफिया में रिज़ा और रज़ा दोनों के माना खुशनूदी और रज़ा लिखा है।
(पेज 260)

फ़िरोज़ुल लुग़ात में रिज़ा और रज़ा दोनों ही लिखा है, अव्वलज़ ज़िक्र के माना ख़ुश और दूसरे के माना ख़ुश होना। यानी ये साहिबे ग़यासुल लुग़ा़त के साथ हैं। (पेज 549)

फरहंगे आ़मिरा में भी ऐसा ही है।
(पेज 247)

जिस का मतलब ये हुआ कि उर्दू ज़ुबान वाले बा इत्तिफाक़ रज़ा बिल फतह़ को भी सही मानते हैं और साहिबे ग़ियास व मुन्तख़ब भी उसकी तसरीह करते हैं। ऐसी सूरत में रज़ा बिल फतह़ ना शरअन ग़लत

है, ना लिसानी हैसियत से, पस बिलकसर वालों का इसरार हम को बे जा नज़र आता है।

(फ़तावा बहरुल ज़ुलूम, जिल्द 6, पेज 391)

अ़ल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी की तहक़ीक़

फ़तावा शारहे बुखा़री में इसी हवाला से एक सवाल यूं किया गया कि आला ह़ज़रत, इमाम अहमद रजा़ का इस्मे गिरामी रा के फ़तह़ के साथ रजा़ है या रा के कसरा के साथ रिजा़ है? ह़ुज़ूरे वाला चूंकि माहिरे रज़वियत हैं इस लिए आप की खिदमत में रुजू कर रहा हूँ, उम्मीद है कि ह़ुज़ूरे वाला इस की तहक़ीक़ फ़रमा देंगे।

अल जवाब

ख़लीफा -ए- ह़ुज़ूर मुफ्ती -ए- आज़मे हिंद, ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफुल ह़क़ अमजदी अ़लैहिर्रहमा जवाब में लिखते हैं कि मुजद्दिदे आज़म कुद्दिसा सिर्रूहु और ह़ुज़ूर मुफ़्ती -ए- आजमे हिंद और ह़ुज्जतुल इस्लाम के अस्मा -ए- गिरामी में रजा़ बिल फ़तह़ है। मैंने जब से होश संभाला अपने अकाबिर से बिल फ़तह़ ही सुना। अस्मा -ए- मुबारक में फ़ारसी तरकीब है और फ़ारसी में रज़ा बिल फ़तह मुस्तमिल है। फ़ारसी की मशहूर लुग़त गियासुल लुगा़त में है :

रज़ा बा कसरा : खुशनूदी

रज़ा बिल फ़तह़ : खुशनूदी शुदन

در منتخب بهمه معنی بفتح نوشته و صاحب کشف و صراح و مزیل الاغلاط و ابن حاج بمعنی اول بکسر نوشته اند

मुझे सिर्फ ये बताना है कि फा़रसी में इस का तलफ्फ़ुज़ रा के कसरा वा फ़तह़ के साथ है और यही हाल उर्दू का भी है जैसा कि फ़िरोज़ुल लुग़ात वग़ैरह में है। जब फा़रसी में इस का तलफ्फुज़ बिल फ़तह़ व कसरा दोनों है तो इस को अज़ रूए लुग़त दोनों तरह पढ़ सकते हैं लेकिन ये अस्मा -ए- मुबारका के आ़लाम हैं और आ़लाम में तग़य्युर जाइज़ नहीं। नाम रखने वालों ने जिस तरह नाम रखा है, उसी तरह रहे और जब ये साबित है कि बुज़ुर्गों के अस्मा -ए- मुबारका रा के फ़तह़ के साथ हैं तो इस को कसरा के साथ पढ़ना दुरूस्त नहीं।

कुछ लोगों को इश्तिबाह इस वजह से है कि रज़ा अ़रबी लफ़्ज़ है और अ़रबी के तमाम लुगा़त में बा कसरा है लेकिन शायद उन्हें ये मालूम नहीं कि अरबी से फ़ारसी में मन्कूल अल्फाज़ में बहुत से तग़य्युरात हुए और उन तग़य्युरात को अहले लिसान ने बरक़रार रखा और वही फसीह़ माना गया और "الغلط العام فصیح" का भी यही मुक़्तज़ा है। बल्कि अगर साहिबे मुंतख़ब का बयान सही है तो अ़रबी में भी फ़तह़ रा के साथ आया है तो अब कोई इश्काल ही नहीं। बहर हा़ल इस खा़दिम को भी यही मालूम है कि ये अस्मा -ए- मुबारका रा

के फ़तह़ के साथ हैं। अल मुअ़जमुल औसत में बा कसरा रा ही है।

मिश्री तरीक़ा ये है कि मुशद्दद ह़ुरूफ़ पर तशदीद के निशाने पर अगर ऊपर ह़रकत है तो फ़तह़ है और तशदीद के नीचे है तो कसरा। इस खा़दिम का तरीका़ ये है के इस सिलसिला में तशद्दुद नहीं करता और ना किसी को टोकता है।

वल्लाहु तआ़ला अ़ालम

(फ़तावा शारेह़ बुख़ारी, जिल्द 3, पेज 344)

फ़तावा बदरूल उ़लमा में

फ़तावा बदरुल उलमा में एक सवाल कुछ यूँ किया गया :

क्या फ़रमाते हैं उलमा -ए- दीन व मुफ्तियाने शरअ़ मतीन वाम फुज़ला -ए- मुहाक़क़ीन मसअला -ए- ज़ेल में कि हमारे यहाँ ये बहस बहुत दिनों से चली आ रही है कि रज़ा (में) "रा" के ज़बर के साथ सही है या "रा" के ज़ेर के साथ। ये बहस इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बेरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहु के नाम से निकली है। कुछ नौ फ़ारिग़ उ़लमा कहते हैं कि आप का नाम अह़मद रज़ा (बा फ़तह़े रा) है और कुछ लोग कहते हैं कि अहमद रिज़ा (बा कसरे रा) है और ये लोग अ़रबी को या उर्दू हर जगह बिल इल्तिज़ाम रिज़ा ही पढ़ते हैं और पढ़ना फ़र्ज़ समझते हैं और इन की दलील ये है कि अल मुंजीद वग़ैरह लुग़ात में रिज़ा का ज़िक्र है, रज़ा का ज़िक्र नहीं है। और जो लोग रज़ा (ज़बर के साथ) के का़इल हैं वो कहते हैं के सलासिले रज़विय्या के शजरे में कई

जगह रज़ा ज़बर के साथ आया है। नीज़ ये ह़ुज़ूर मुफ़्ती -ए- आज़मे हिंद क़ुद्दिसा सिर्रूहू के सामने हमेशा रज़ा ज़बर के साथ पढ़ा गया लेकिन कभी ह़ज़रत ने मना नहीं फ़रमाया लिहाज़ा तलब अम्र ये है कि रज़ा के ज़बर के साथ दुरूस्त है या ज़ेर के साथ?
मुफ़स्सल व मुदल्लल जवाब इनायत फरमाएं और दस्तखत व मुहर से मुज़य्यन फ़रमा कर ममनून फरमाएं।[1]

अल जवाब

इस सवाल का जवाब देते हुए बदरुल उ़लमा अ़ल्लामा बदरुद्दीन अह़मद सिद्दीक़ी लिखते हैं :

الجواب اللهم هداية الحق والصواب

رضا بکسر الراء المهملہ اور رضا بفتح الراء المهملہ

दोनो सही हैं ग़ियासुल लुग़ात मतबूआ मुंबई पेज 328 कॉलम अव्वल में है :

رضا بکسر خوشنودی و بفتح و مد خوشنود شدن و باصطلاح اہل

(1) (ये सवाल वही है जो हम फ़तावा बह़रुल उ़लूम के ह़वाले से नक़्ल कर चुके हैं, यहाँ साइल का नाम अलग है मगर शहर एक है और मज़े की बात ये है कि सवाल में तारीख भी एक ही है। अगर्चे फ़तावा बदरुल उ़लमा में सवाल के नीचे 2 सफर 1402 हिजरी लिखा हुआ है लेकिन सहीह 1406 हिजरी होना चाहिए क्योंकि जवाब में 1406 लिखा गया है। यहाँ ये हो सकता है कि एक ही दिन इस्तिफ़्ता लिख कर कई जगहों पर भेजा गया हो, वल्लाहु तआ़ला आलम

تصوف خوشنودی کردن بر ہر چہ از قضائے الٰہی بہ بند رسد
وفروتر ازیں مرتبہ صبرست و بالا ایں مرتبہ تسلیم در منتخب بہمہ
معنی بفتح نوشتہ صاحب کشف وصراح ومزیل الاغلاط و ابن حاج
بمعنی اول بکسر نوشتہ اند

महजबुल लुग़ात जिल्द शशुम मतबुआ लखनऊ पेज 26 कॉलम 3 में है :
रज़ा (बा फ़तहे) अव्वल खुशनूदी होना क़ज़ा-ए-इलाही पर राज़ी होना। अ़रबी फ़सीह़ राईज।

रज़ा (बा कसरा अव्वल) ख़ुशनूदी अ़रबी फ़सीह़ राईज। अल मुंजीद और साराह में वाक़ई रज़ा (बिल कसरा......) का ज़िक्र है। रज़ा (फ़तहे...) का ज़िक्र नहीं लेकिन अ़दम ज़िक्र को ज़िक्रे अ़दम मानना ये अहले इल्म का शेवा नहीं।

هذا ما عندی والعلم عند ربی سبحنه تعالی ثم عند
رسوله علیه التحیه و الثناء

(फ़तावा बदरुल उ़लमा, पेज 324)

फ़तावा शरफ़े मिल्लत में

फ़तावा शरफे मिल्लत में भी इस मसअले का जिक्र मौजूद है।

सुवाल किया गया कि :

क्या फ़रमाते हैं उलमा -ए- किराम व मुफ्तियाने इजा़म, आला ह़ज़रत का नामे मुबारक अह़मद रजा़ जो है रा फ़तह़ के साथ है या ज़ेर जबकि अ़रबी लुग़ात में अल रज़ा में रा कसरा के साथ है और उर्दू लुग़ात में सैय्यदुना इमाम अ़ली रज़ा का इल्म में रा के कसरा के साथ... जवाब इनायत फ़रमाएं।

मुहम्मद मंज़ूर आलम बरकाती

अल जवाब

الجواب بعون الملك الوهاب ومنه الصدق والصواب

بسم الله الرحمن الرحيم

सूरते मसऊला में शारेह़ बुखारी नाईबे मुफ्ती -ए- आज़म रह़मतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैह लफ़्ज़े रज़ा की तहक़ीक़ में लिखते हैं :

मैंने जब से होश संभाला अपने अकाबिर से बिल फ़तह़ ही सुना। इन अस्मा -ए- मुबारका में फ़ारसी तरकीब है और फ़ारसी में रज़ा बिल फ़तह़ मुस्तमिल है। फ़ारसी की मशहूर लुग़त ग़ियासुल लुग़ात में है :

रज़ा बा कसरा : खुशनूदी

रज़ा बिल फ़तह़ : खुशनूदी शुदन

در منتخب بهمه معنی بفتح نوشته صاحب کشف و صراح و مزیل الاغلاط و ابن حاج بمعنی اول بکسر نوشته اند

मुझे सिर्फ ये बताना है कि फा़रसी में इस का तलफ़्फ़ुज़ रा के कसरा व फ़तह़ के साथ है और यही हाल उर्दू का भी है जैसा कि फ़िरोज़ुल लुग़ात वग़ैरह में है। जब फा़रसी में इस का तलफ़्फ़ुज़ बिल फ़तह़ व बिल कसरा दोनों है तो इस को अज़ रूए लुग़त दोनों तरह पढ़ सकते हैं लेकिन ये अस्मा -ए- मुबारका के आ़लाम हैं और आ़लाम में तग़य्युर जाइज़ नहीं। नाम रखने वालों ने जिस तरह नाम रखा है, उसी तरह रहे और जब ये साबित है कि इन बुज़ुर्गों के अस्मा -ए- मुबारका रा के फ़तह़ के साथ हैं तो इस को कसरा के साथ पढ़ना दुरुस्त नहीं।

कुछ लोगों को इश्तिबाह इस वजह से है कि रज़ा अ़रबी लफ़्ज़ है और अ़रबी के तमाम लुग़ात में बा कसरा रा है लेकिन शायद उन्हें ये मालूम नहीं कि अ़रबी से फ़ारसी में मन्कू़ल अल्फाज़ में बहुत से तग़य्युरात हुए और उन तग़य्युरात को अहले लिसान ने बरक़रार रखा और वही फ़सीह़ माना गया और "الغلط العام فصیح" का भी यही मुक़्तजा़ है। बल्कि अगर साहि़बे मुन्तख़ब का बयान सही है तो अ़रबी में भी फ़तह़े रा के साथ आया है। तो अब कोई इश्काल ही नहीं।

बहर हा़ल इस खा़दिम को यही मालूम है कि ये अस्मा -ए- मुबारका रा के फ़तह़ के साथ हैं। अल मुअ़जमुल औसत में बा कसरा रा ही है।

मिश्री तारीका ये है कि मुशद्दद ह़र्फ़ पर तशदीद के निशान पर अगर ऊपर ह़रकत है तो फ़तह़ है और तशदीद के नीचे है तो कसरा। इस खा़दिम का तरीका़ है कि इस सिलसिले में तशद्दुद नहीं करता और न किसी को टोकता है। वल्लाहु तआ़ला अ़ालम
(फ़तावा शरफ़े मिल्लत, पेज 130)

मज़कूरा दलाइल से बिल्कुल वाज़ेह है कि रज़ा को रा के ज़बर के साथ पढ़ना ही दुरूस्त है। इसी तरह अकाबिरीने अहले सुन्नत ने लिखा और पढ़ा है। इस के खिलाफ़ जाकर इस लफ़्ज़ को अ़रबी का ऐसा पाबंद बनाना दुरूस्त नहीं है कि उसमें तलफ्फुज़ ही बदल दिया जाए। जो लोग रज़ा को रा के ज़ेर के साथ पढ़ते हैं या लिखते हैं वो अज़ रूए उसूल ग़लत करते हैं।

खा़तिमा

आखि़र में हम यही अ़र्ज़ करेंगे कि ये कोई ऐसा मसअला नहीं कि जिसकी वजह से शिद्दत बरती जाए। जो तहकी़क़ थी वो पेश कर दी गई है। और जैसा कि मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैह ने तह़रीर फ़रमाया कि “इस खा़दिम का तरीक़ा है कि इस सिलसिले में तशद्दुद नहीं करता, और ना किसी को टोकता है।” हम भी इसी पर इस गुफ़्तगू को खत्म करते हैं कि ऐसे मसाइल में हम भी शिद्दत के खि़लाफ़ हैं। और अल्लाह बेहतर जानने वाला है।

हिंदी में हमारी दूसरी किताबें

बहारे तहरीर - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल (अब तक चौदह हिस्से)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा? - अब्दे मुस्तफ़ा
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अब्दे मुस्तफ़ा
इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अब्दे मुस्तफ़ा
शबे मेराज गौसे पाक - अब्दे मुस्तफ़ा
शबे मेराज नालैन अर्श पर - अब्दे मुस्तफ़ा
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अब्दे मुस्तफ़ा
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अब्दे मुस्तफ़ा
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अब्दे मुस्तफ़ा
चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
बिन्ते हव्वा (एक संजीदा तहरीर) - कनीज़े अख़्तर
सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अब्दे मुस्तफ़ा
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहक़ीक़ - अब्दे मुस्तफ़ा
औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी - अब्दे मुस्तफ़ा
आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1) - अब्दे मुस्तफ़ा
क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा? - अब्दे मुस्तफ़ा
शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही
इस्लामी तअ़लीम (हिस़्सा अव्वल) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी
मुहर्रम में निकाह - अब्दे मुस्तफ़ा
रिवायतों की तहक़ीक़ (पहला हिस्सा) - अब्दे मुस्तफ़ा
रिवायतों की तहक़ीक़ (दूसरा हिस्सा) - अब्दे मुस्तफ़ा
ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अब्दे मुस्तफ़ा
एक निकाह ऐसा भी - अब्दे मुस्तफ़ा

काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
रिवायतों की तहकीक़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी
ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान
मैं नहीं जानता - मौलाना हसन नूरी गोंडवी
जंगे बद्र के हालात इख़्तिसार के साथ - मौलाना अबू मसरूर असलम रज़ा मिस्बाही कटिहारी
तहक़ीक़े इमामत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
सफ़रनामा बिलादे ख़मसा - अब्दे मुस्तफ़ा
मंसूर हल्लाज - अब्दे मुस्तफ़ा
फ़र्ज़ी क़ब्रें - अब्दे मुस्तफ़ा
इमाम अबू यूसुफ का दिफा - इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला
इमाम क़ुरैशी होगा - इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला
हिन्दुस्तान दारुल ह़रब या दरुल इस्लाम? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा
रज़ा या रिज़ा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा

Abde Mustafa Official is a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at working since 2014 on the Aim to propagate Quraan and Sunnah through electronic and print media. We're working in various departments.

(1) Blogging : We have a collection of Islamic articles on various topics. You can read hundreds of articles in multiple languages on our blog.
amo.news/blog

(2) Sabiya Virtual Publication
This is our core department. We are publishing Islamic books in multiple languages. Have a look on our library **amo.news/books**

(3) E Nikah Matrimonial Service
E Nikah Service is a Matrimonial Platform for Ahle Sunnat Wa Jama'at. If you're searching for a Sunni life partner then E Nikah is a right platform for you.
www.enikah.in

(4) E Nikah Again Service
E Nikah Again Service is a movement to promote more than one marriage means a man can marry four women at once, By E Nikah Again Service, we want to promote this culture in our Muslim society.

(5) Roman Books
Roman Books is our department for publishing Islamic literature in Roman Urdu Script which is very common on Social Media.
read more about us on **amo.news**
For futher inquiry: info@abdemustafa.in

SCAN HERE

9102520764

BANK DETAILS
Account Details :
Airtel Payments Bank
Account No.: 9102520764
(Sabir Ansari)
IFSC Code : AIRP0000001

or open this link | amo.news/donate

A

Abde Mustafa Official is a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at working since 2014 on the Aim to propagate Quraan and Sunnah through electronic and print media. We're working in various departments.

(1) Blogging : We have a collection of Islamic articles on various topics. You can read hundreds of articles in multiple languages on our blog.

blog.abdemustafa.in

(2) Sabiya Virtual Publication

This is our core department. We are publishing Islamic books in multiple languages. Have a look on our library **books.abdemustafa.in**

(4) E Nikah Matrimonial Service

E Nikah Service is a Matrimonial Platform for Ahle Sunnat Wa Jama'at. If you're searching for a Sunni life partner then E Nikah is a right platform for you.

www.enikah.in

(4) E Nikah Again Service

E Nikah Again Service is a movement to promote more than one marriage means a man can marry four women at once, By E Nikah Again Service, we want to promote this culture in our Muslim society.

(5) Roman Books

Roman Books is our department for publishing Islamic literature in Roman Urdu Script which is very common on Social Media.

read more about us on **www.abdemustafa.in**

For futher inquiry: info@abdemustafa.in

M O

ISBN (N/A)